वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।)

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

'हिन्दी पखवारा' (14 सितंबर 2021 से 28 सितंबर 2021)

के उपलक्ष्य पर प्रथम आयोजन

हिन्दी दिवस अन्तर्राष्ट्रीय ई.संगोष्ठी

14 सितम्बर 2021, अपराह्न 2.30

विषय: "वैश्वीकरण और हिन्दी की चुनौतियाँ तथा हिन्दी की वैश्विक स्थिति"

समारोह अध्यक्षा

प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी

पूर्व प्राचार्या, महिला महाविद्यालय
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

मुख्य अतिथि वक्ता

डॉ. उषा शर्मा

सोफिया,
बल्गारिया

स्वागत वक्तव्य

प्रो0 रचना श्रीवास्तव

प्राचार्या

विषय प्रस्थापना

प्रो0 आशा यादव

विभागाध्यक्षा

वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी)

हिन्दी–पखवाड़ा आयोजन (14 सितंबर से 28 सितंबर 2021)

कार्यक्रम	दिनाँक	विषय
1–अन्तर्राष्ट्रीय ई–संगोष्ठी	14.09.2021	वैश्वीकरण और हिन्दी को चुनौतियाँ तथा हिन्दी की वैश्विक स्थिति' अध्यक्ष– प्रो0 चन्द्रकला त्रिपाठी (पूर्व प्राचार्या,महिला महाविद्यालय,काहिविवि) मुख्य अतिथि वक्ता– डॉ0 उषा शर्मा सोफिया, बल्गारिया
2–संत साहित्य संगीत प्रतियोगिता	14.09.2021	संत कवियों के जीवन पर आधारित भजन सह–संयोजक– डॉ0 स्वर वन्दना शर्मा डॉ0 मीनू पाठक
3–काव्यपाठ प्रतियोगिता	20.09.2021	हिन्दी हमारी अस्मिता सह–संयाजक– डॉ0 ऋतम्भरा तिवारी
4–निबंध लेखन प्रतियोगिता	21.09.2021	वैश्वीकरण और हिन्दी की चुनौतियाँ सह–संयोजक– डॉ0 सपना भूषण
5–काव्य लेखन प्रतियोगिता	22.09.2021	गंगा नदी, चिड़िया, (खंजन,कोयल,मैना,गौरैया,तोता,मोर) पर्यावरण,कोरोना सह–संयोजक– डॉ0 शशिकला

6–हिन्दी वाग्मिता प्रतियोगिता	23.09.2021	'हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं के लिए कार्य क्षेत्र और रोजगार के अवसर सह–संयोजक– डॉ0 शुभांगी श्रीवास्तव
7–समापन–समारोह	30.09.2021	'स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव और हिन्दी' मुख्य अतिथि वक्ता– डॉ0 वर्षा रानी

संयोजक
डॉ0 आशा यादव
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय,
कमच्छा, वाराणसी

प्राचार्या
प्रो0 रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या
वसन्त कन्या महाविद्यालय,
कमच्छा, वाराणसी

वसन्त कन्या महाविद्यालय

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

(नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त)

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

हिन्दी पखवारा १४ सितम्बर २०२१ से २८ सितम्बर २०२१

के अन्तर्गत

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

२५ सितम्बर २०२१

विषयः ''वैश्वीकरण और हिन्दी की चुनौतियाँ''

निर्णायक मण्डल के सदस्य

प्रो. कल्पलता डिमरी
अध्यक्षा, अर्थशास्त्र विभाग

डॉ. शशिकला
हिन्दी विभाग

डॉ. सुप्रिया
अंग्रेजी विभाग

डॉ. सपना भूषण
हिन्दी विभाग
सह-समन्वयक

डॉ. आशा यादव
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
समन्वयक

प्रो. रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या,
संरक्षिका

वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।)

Dr. Annie Besant

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

हिन्दी पखवारा समापन-समारोह

30 सितंबर 2021, अपराह्न 2.30 बजे

विषय- 'स्वतंत्रता का अमृतमहोत्सव और हिन्दी'

मुख्य अतिथि

डॉ0 वर्षा रानी

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मुसाफ़िरखाना, अमेठी, उत्तर प्रदेश।

विशिष्ट अतिथि

श्रीमती उमा भट्टाचार्य

प्रबन्धक,वसंत कन्या महाविद्यालय

कमच्छा, वाराणसी।

अध्यक्षा

प्रो0 रचना श्रीवास्तव

प्राचार्या

संयोजिका

डॉ0 आशा यादव

अध्यक्षा, हिन्दी विभाग

वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी)

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

द्विदिवसीय ई. अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान-श्रृंखला

18 नवंबर, 2021 एवं 20 नवंबर, 2021

मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता

प्रो. आनंद वर्धन
विज़िटिंग प्रोफेसर,
ICCR Chair, भारत विद्या विभाग,
सोफिया विश्वविद्यालय, बल्गारिया

मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता

प्रो. श्रद्धा सिंह
कला संकाय, हिंदी विभाग,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय

विषय प्रस्थान

प्रो. आशा यादव
विभागाध्यक्षा
वसंत कन्या महाविद्यालय

स्वागत वक्तव्य

प्रो. रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या
वसंत कन्या महाविद्यालय

संरक्षिका

श्रीमती उमा भट्टाचार्य
प्रबन्धक
वसंत कन्या महाविद्यालय

वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।

Dr. Annie Besant

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

द्विदिवसीय ई. अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान-शृंखला

प्रथम व्याख्यान

18 नवंबर, बृहस्पतिवार, 2021 ; अपराह्न 2.30 बजे

विषय: 'नयी कहानी और युगीन बोध'

मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता

प्रो. आनंद वर्धन
विज़िटिंग प्रोफेसर,
ICCR Chair, भारत विद्या विभाग,
सोफिया विश्वविद्यालय, बल्गारिया

विषय प्रस्थान

प्रो. आशा यादव
विभागाध्यक्षा
वसंत कन्या महाविद्यालय

स्वागत वक्तव्य

प्रो. रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या
वसंत कन्या महाविद्यालय

वसंत कन्या महाविद्यालय

[illegible]

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी)

Dr. Annie Besant

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

द्विदिवसीय ई. अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान-श्रृंखला

द्वितीय व्याख्यान

20 नवंबर, शनिवार, 2021 ; पूर्वाह्न 11.00 बजे

विषय: 'स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी'

मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता

प्रो. श्रद्धा सिंह
कला संकाय, हिंदी विभाग,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय

विषय प्रस्ताव

प्रो. आशा यादव
विभागाध्यक्षा
वसंत कन्या महाविद्यालय

स्वागत वक्तव्य

प्रो. रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या
वसंत कन्या महाविद्यालय

हिन्दी पखवारा-आयोजन

(14 सितंबर 2021 से 28 सितंबर 2021)

हिन्दी पखवारा 14 सितंबर 2021 से 28 सितंबर 2021 के अन्तर्गत विविध प्रतिस्पर्धी आयोजनों एवं समारोह का प्रारूप-

1. 14/09/2021 को हिन्दी दिवस आयोजन:

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में **"वैश्वीकरण व हिन्दी की चुनौतियाँ तथा हिन्दी की वैश्विक स्थिति"** विषयक अन्तर्राष्ट्रीय ई संगोष्ठी का आयोजन -

समारोह अध्यक्षा	-	प्रो.चन्द्रकला त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्या महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.
मुख्य अतिथि	-	डॉ.उषा शर्मा, इण्डियन ऐम्बेसी, बुल्गारिया
विशिष्ट अतिथि	-	श्रीमती उमा भट्टाचार्य, प्रबंधक, व.क.म. कमच्छा, वाराणसी
स्वागत वक्तव्य	-	प्रो.रचना श्रीवास्तव, प्राचार्या, व.क.म. कमच्छा, वाराणसी
काव्यपाठ प्रस्तुति	-	
अभिभाषण प्रस्तुति	-	
विषय प्रस्थापना	-	प्रो.आशा यादव, अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
संचालिका	-	डॉ.शुभांगी श्रीवास्तव
आभार	-	डॉ.सपना भूषण
प्रेस रिपोर्ट	-	डॉ.शशिकला डॉ.ऋतम्भरा
सांगीतिक आयोजन	-	डॉ.स्वरवंदना शर्मा के निर्देशन में संगीत विभाग की छात्राएँ

2. हिन्दी पखवारा कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजन की रूपरेखा-

क- हिन्दी संत कवियों की रचनाओं पर आधारित भजन प्रतियोगिता से शुभारंभ :

दिनांक- 14/09/2021

संयोजन - डॉ,स्वरवन्दना शर्मा, प्रो.मीनू पाठक

ख- हिन्दी निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता

विषय - "वैश्वीकरण और हिन्दी की चुनोतियाँ"

	संयोजन	- डॉ.सपना भूषण
ग-	**हिन्दी काव्य-लेखन प्रतियोगिता**	
	विषय	- पर्यावरण, गंगानदी, कोरोना, चिड़िया (खंजन, गौरैया, मैना, तोता, मोर में से कोई एक)
	संयोजन	- डॉ.शशिकला
घ-	**हिन्दी वाग्मिता प्रतियोगिता**	
	विषय	- "हिन्दी में उच्च शिक्षाप्राप्त युवाओं के लिये कार्यक्षेत्र और रोजगार के अवसर"
	संयोजन	- डॉ.शुभांगी श्रीवास्तव
ङ-	**काव्यपाठ प्रतियोगिता**	
	विषय	- "हिन्दी हमारी अस्मिता"
	संयोजन	- डॉ. ऋतम्भरा तिवारी
च-	**समापन कार्यक्रम : दिनांक- 28/09/2021**	
1-	सांगीतिक प्रस्तुतियाँ	- डॉ.स्वरवन्दना शर्मा एवं प्रो.मीनू पाठक के निर्देशन में छात्राएँ
2-	हिन्दी पखवारा रिपोर्ट वाचन	- प्रो.आशा यादव
3-	प्रमाणपत्र व पुरस्कार वितरण-	- श्रीमती उमा भट्टाचार्य, प्रबंधक, व.क.म. कमच्छा, वाराणसी
		- प्रो.रचना श्रीवास्तव, प्राचार्या, व.क.म. कमच्छा, वाराणसी
4-	आभार	- डॉ.शशिकला
5-	संचालन	- डॉ. ऋतम्भरा तिवारी
6-	प्रेस-रिपोर्ट	- डॉ.सपना भूषण डॉ. ऋतम्भरा तिवारी डॉ.शुभांगी श्रीवास्तव

* समापन कार्यक्रम के लिए मुख्य अतिथि का नाम यथासमय उनकी स्वीकृति के पश्चात् उल्लेखित होगा ।

प्रो. आशा यादव
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
वसंत कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी।

EDUCATION AS SERVICE

VASANT KANYA MAHAVIDYALAYA
Kamachha, Varanasi - 221 010
(Run by The Indian Section, The Theosophical Society)
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा,वाराणसी–221 010
(भारतीय शाखा, थियोसॉफिकल सोसाइटी द्वारा संचालित)
Admitted to the privileges of Banaras Hindu University
Institution Accredited 'A' by NAAC
Phone –(0542)2455382
Email-vkmdegree.college@gmail.com

11.08.2021

रिपोर्ट

वसन्त कन्या महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में दिनांक 11 अगस्त, 2021 मध्याह्न 12:00 बजे तुलसी जयंती के अवसर पर ई. संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक – "आज का समय और रामचरितमानस की उपादेयता" रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो0 उमापति दीक्षित अध्यक्ष, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) को आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ संगीत विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ0 स्वरवंदना शर्मा के निर्देशन में संगीत विभाग की छात्राओं (अमिषा, कृतिनंदा, आयुषी गोस्वमी, मंजरी शुक्ला) द्वारा कुलगीत से किया गया। तदोपरान्त उनके द्वारा महाकवि की अत्यंत सरस तुलसी प्रशस्ति भी प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर विविधि विषयों में दक्षता रखने वाली महाविद्यालय की आदरणीय प्रबंधक महोदया श्रीमती उमा भट्टाचार्या ने महाकवि तुलसी दास जी के प्रति अत्यंत सारगर्भित वचनों में भावसुमनांजलि अर्पित करते हुए अपना शुभाशीष हमें दिया तथा रामचरितमानस की नैतिक उपादेयता को उद्‌घाटित किया। तत्पश्चात् महाविद्यालय की संरक्षिका प्राचार्या प्रो0 रचना श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए तथा रामचरितमानस की महत्ता को दर्शाते हुए बताया कि धार्मिक ग्रन्थ किस प्रकार से हमारे लिए उपयोगी है और हमारे चरित्र निर्माण में कितना सहायक है। उन्होंनें सुन्दरकांड की भी चर्चा करते हुए उसकी उपादेयता पर प्रकाश डाला। इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए हिन्दी विभाग की विदुषी विभागाध्यक्षा – डॉ0 आशा यादव ने विषय प्रस्थापन करते हुए कहा कि वैश्विकरण के कारण आज मनुष्य यांत्रिक हो गया है और औद्योगिककरण में मनुष्य की प्रकृति की स्वाभाविकता को छिन लिया है। उन्होंने अपने वक्तव्य में तुलसीदास के द्वारा महिला मुक्ति के आन्दोलन की भी बात कही।

अगले क्रम में बी. ए. तृतीय वर्ष की छात्रा प्रेरणा शुक्ला ने तुलसीदास का समग्र जीवनवृत्त प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् इस विशेष आयोजन के मुख्य वक्ता उमापति दीक्षित (अध्यक्ष नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग, केन्द्रिय हिन्दी संस्थान, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) ने बताया कि जब तक हमारा जीवन रहेगा तब तक रामचरितमानस के मूल्यों की उपादेयता बनी रहेगी। रामचरितमानस मानवीय मूल्यों को हमारे समक्ष उद्‌घाटित करती है, धार्मिक ग्रन्थ भारतीय संस्कृति का आधार है। जो नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति कर भारतीय संस्कृति को सुगठित करती है।

कार्यक्रम का सुगठित एवं सुन्दर संचालन डॉ0 ऋतम्भरा तिवारी तथा कृतज्ञताज्ञापन डॉ0 सपना भूषण ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का प्रेस रिपोर्ट लेखन डॉ0 शुभांगी श्रीवास्तव ने किया। इस कार्यक्रम में हिन्दी विभाग की स्नातकोत्तर वर्ष एवं स्नातक तृतीय वर्ष की लगभग 121 छात्राएं सम्मिलित रहीं। इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय के अन्य शिक्षक – शिक्षिकाओं ने भी हर्ष पूर्वक सहभागिता करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रबन्धक
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी

हिन्दी सांध्य दैनिक
प्रखर पूर्वांचल
अखबार नहीं आंदोलन

NI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gm

जीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरि

वसंत कन्या महाविद्यालय में तुलसी जयंती के उपलक्ष्य में ई संगोष्ठी का हुआ आयोजन

प्रखर पूर्वांचल वाराणसी। बुधवार 11अगस्त को वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा तुलसी जयंती के उपलक्ष्य में ई संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसका विषय था "आज का समय और रामचरितमानस की उपादेयता" मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर उमापति दीक्षित मौजूद थे।कार्यक्रम का आरंभ विश्वविद्यालय के कुल गीत से हुआ।जिसकी तैयारी संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ स्वर वंदना शर्मा ने करवाई व सौम्यकान्त चटर्जी तबले पर संगत कर रहे थे। कुल गीत का गायन संगीत विभाग की छात्राओं ने किया। तत्पश्चात महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय द्वारा रचित 'तुलसी प्रशस्ति' का गायन हुआ जिसे संगीत विभाग की पूर्व अध्यक्षा प्रोफेसर मंजू सुंदरम ने किया था ।विश्वविद्यालय की प्रबंधक महोदया श्रीमती उमा भट्टाचार्य ने तुलसीदास को अपनी भाव- सुमनांजलि अर्पित की।उन्होंने कहा कि तुलसीदास की रचनाएं हमारे भारतीय जनमानस में रची बसी है।रामचरित मानस प्रेरणा का स्रोत है।जीवन की चुनौतियों में रामचरितमानस एक मार्गदर्शक का कार्य करता है।ओजस्विनी प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य दिया उन्होंने बताया कि वसंत कन्या महाविद्यालय की स्थापना कब और कैसे हुई।उन्होंने बहुत ही सुंदर ढंग से तुलसीदास और रामचरितमानस के महत्व को बताया। कोरोना काल में लोग किस प्रकार से रामचरितमानस और अपने धार्मिक ग्रंथों से जुड़े और उनका क्या प्रभाव पड़ा यह भी उन्होंने बताया। इस उपभोक्तावादी संस्कृति से उभरने के लिए मानस का पठन-पाठन हमारी बहुत सहायता करता है। उन्होंने मानस के दोहों की सार्थकता को बताया और कहा कि वर्तमान समय में मानस का पुनर्पाठ बहुत आवश्यक है।

वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।)

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan

हिन्दी विभाग द्वारा

शिक्षक दिवस पर आयोजित ई.संगोष्ठी

6 सितम्बर 2021, सोमवार, मध्याह्न 12.00

विषय: ''सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का व्यक्तित्व, कृतित्व व जीवन दर्शन तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की भूमिका''

मुख्य अतिथि

डॉ0 तृप्ति रानी जयसवाल

पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग

वसन्त कन्या महाविद्यालय

कमच्छा वाराणसी।

विशिष्ट वक्ता

प्रो0 रचना श्रीवास्तव

प्राचार्या

स्वागत वक्तव्य

प्रो0 आशा यादव

विभागाध्यक्षा

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में हुआ ई-संगोष्ठी का आयोजन

वाराणसी (रणभेरी)। वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर 6 सितंबर को ई संगोष्ठी आयोजित की गई। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्यक्तित्व व जीवन दर्शन तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की क्या भूमिका है। मुख्य अतिथि के रूप में वसंत कन्या महाविद्यालय हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्षा डॉक्टर तृप्ति रानी जायसवाल उपस्थित रही।कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ स्वरवंदना शर्मा के निर्देशन में संगीत विभाग द्वारा छात्राओं द्वारा कुलगीत और कबीर, मीरा के भजनों से शुरू हुआ। हिंदी विभाग के अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि सवर्पल्ली राधाकृष्णन द्वारा निर्देशित नैतिक मूल्यों को शिक्षक व शिक्षार्थी अपने जीवन में उतार कर जीवन पथ पर सच्चे मनुष्य बन कर अग्रसर हो सकते हैं मुख्य अतिथि तृप्ति रानी जायसवाल आयोजन के विषय पर उद्बोधन देते हुए बच्चों को बताया कि

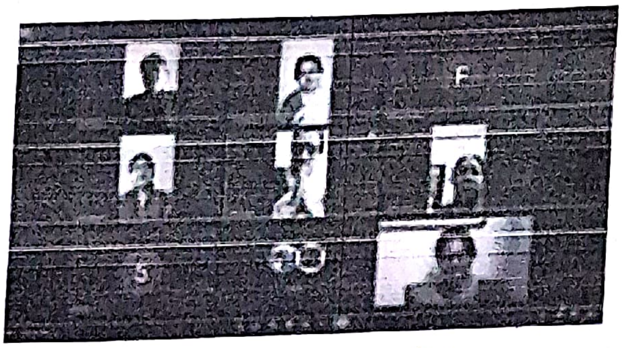

भारतीय संस्कृति परंपरा में गुरु का सर्वोच्च स्थान है। राधा कृष्ण शिक्षा का उद्देश्य सृजनसील और रचनात्मक होना मानते हैं।कार्यक्रम की अध्यक्षता वसंत कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने अपने आशीर्वचनों से किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ शुभांगी श्रीवास्तव ने किया। प्रेस रिपोर्ट प्रेषण का कार्य वसंत कन्या महाविद्यालय हिंदी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर सपना भूषण ने किया। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष तथा स्नातक द्वितीय व तृतीय वर्ष की लगभग 100 छात्राएं सम्मिलित रही। आयोजन में महाविद्यालय के अन्य शिक्षक शिक्षिकाओं भी हर्ष पूर्वक सहभागिता करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया।

Dr. Annie Besant

EDUCATION AS SERVICE

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan

आमंत्रण पत्र

दिनांक: 02/09/2021

प्रतिष्ठा में,

डॉ0 तृप्ति रानी जायसवाल
पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
वसंत कन्या महाविद्यालय,
कमच्छा वाराणसी।

महोदया,

साग्रह अनुरोध है कि आगामी दिनांक 6 सितंबर 2021, सोमवार को मध्याह्न 12:00 बजे से हमारे महाविद्यालय का हिन्दी विभाग **'शिक्षक दिवस'** का आयोजन करने जा रहा है।

एतदर्थ प्रार्थना है कि आप उक्त आयोजन के मुख्य अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन को उत्कर्ष प्रदान कर हमें कृतार्थ करें।

साभार,

संयोजिका
प्रो0 आशा यादव
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा वाराणसी।

प्राचार्या
प्रो0 रचना श्रीवास्तव
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा वाराणसी।

सोमवार की शाम बाइक सवार बदमाश बुजुर्ग महिला के गले से चेन नोचकर भाग निकले। महिला सब्जी लेकर घर लौट रही थीं। पुलिस सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की मदद से बाइक सवारों की तलाश कर रही है। बदमाशों ने चेन स्नेचिंग से पहले महिला से उनके बेटे के बारे में पूछा। पुलिस को शक है कि सभी स्थानीय हैं। जखनिया (गाजीपुर) के मूल निवासी राजेंद्र सिंह सरकारी नौकरी से रिटायर होने के बाद खुशहाल नगर कॉलोनी सेक्टर एक के लेन नंबर चार में परिवार के साथ रहते हैं। शाम करीब सात बजे पत्नी विमला सिंह (60) सब्जी खरीदने गई थीं। सब्जी लेकर लौटते वक्त लेन नंबर तीन पर

मास्क लगाए दो युवक बाइक से पहुंचे। महिला को रोककर बेटे गोलू के बारे में पूछा। उन्होंने जानकारी न होने की बात कही। बाइक सवारों ने झपट्टा मारकर पीछे से चेन नोच लिया। नटिनियादाई की ओर भाग निकले। विमला सिंह ने बताया कि चेन का वजन 18 ग्राम था। विमला सिंह घर पहुंचीं। जानकारी दी। पता चलने पर एडीसीपी वरुणा प्रबल प्रताप सिंह और शिवपुर प्रभारी निरीक्षक प्रेम प्रकाश सिंह वारदात स्थल पर पहुंचे थे।

वाराणसी (रणभेरी)। अपराध एवं अपराधियों के ऊपर प्रभावी नियंत्रण बनाने के लिए चलाय जा रहे अभियान के तहत सीपी ए, सतीश गणेश के दिशा निर्देशन में पुलिस उपयुक्त काशी जोन अमित कुमार ने अगस्त महीने में 12 शातिर अपराधियों पर गैंगेस्टर एक्ट की कार्रवाई की संस्तुति की है। इसके साथ ही काशी जोन के रामनगर, कोतवाली, आदमपुर, चौक, लक्सा, भेलूपुर और लंका थाने पर 71 लोगों पर गुंडा एक्ट लगाकर उन्हें पाबन्द किया गया है। वहीं 7 अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोली गयी है।

पूर्व ग्राम प्रधान टीकाकरण केंद्र पर उपलब्ध कराया कुर्सी

वाराणसी(रणभेरी)। सीएम योगी आदित्यनाथ द्वारा गोद लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हाथी बाजार पर टीकाकरण के लिए उमड़ रहे लोगो के भीड़ व तेज धूप में खड़े होकर अपने बारी टीकाकरण कराने का इंतजार कर रहे लोगो के समस्या के मद्देनजर पूर्व ग्राम प्रधान हाथी स्व. शिव कुमारी देवी के परिजनों ने मंगलवार को सीएचसी हाथी को पचास कुर्सी योगदान के रूप में देकर समाजसेवा का मिशाल पेश किया है। वही इस सम्बंध में मनोज कुमार सिंह का कहना रहा कि पूर्व ग्राम प्रधान पुत्र मनीष सिंह ठाकुर कोविड काल सहित अन्य परिस्थितियों में भी लोगो का भरपूर मदद व सहयोग करने का कार्य करते है। इसी क्रम में स्वास्थ्य केन्द्र हाथी पर इस समय टीकाकरण कराने वाले लोगो की भारी भीड़ उमड़ रही है और तेज धूप होने के कारण लोग अपने अपने बारी का इंतजार घण्टो घण्टो खड़े होकर करते है इसी सभी समस्याओं के बाबत सीएचसी हाथी को पचास कुर्सी देकर मानवता व समाजसेवा का मिशाल पेश किया।

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में हुआ ई-संगोष्ठी का आयोजन

वाराणसी (रणभेरी)। वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर 6 सितंबर को ई संगोष्ठी आयोजित की गई। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्यक्तित्व व जीवन दर्शन तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की क्या भूमिका है। मुख्य अतिथि के रूप में वसंत कन्या महाविद्यालय हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर तृप्ति रानी जायसवाल उपस्थित रही कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ स्वरवंदना शर्मा के निर्देशन में संगीत विभाग द्वारा छात्राओं द्वारा कुलगीत और कबीर, मीरा के भजनों से शुरू हुआ। हिंदी विभाग के अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा निर्देशित नैतिक मूल्यों को शिक्षक व शिक्षार्थी अपने जीवन में उतार कर जीवन पथ पर सच्चे मनुष्य बन कर अग्रसर हो सकते हैं मुख्य अतिथि तृप्ति रानी जायसवाल आयोजन के विषय पर उद्बोधन देते हुए बच्चों को बताया कि

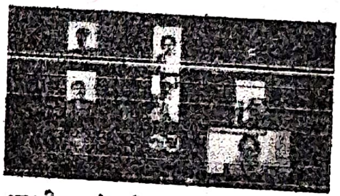

भारतीय संस्कृति परंपरा में गुरु का सर्वोच्च स्थान है। राधा कृष्ण शिक्षा का उद्देश्य सृजनसील और रचनात्मक होना मानते हैं कार्यक्रम की अध्यक्षता वसंत कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने अपने आशीर्वचनों से किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ शुभांगी श्रीवास्तव ने किया। प्रेस रिपोर्ट प्रेषण का कार्य वसंत कन्या महाविद्यालय हिंदी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर सपना भूषण ने किया। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष तथा स्नातक द्वितीय व तृतीय वर्ष की लगभग 100 छात्राएं सम्मिलित रही। आयोजन में महाविद्यालय के अन्य शिक्षक शिक्षिकाओं भी हर्ष पूर्वक सहभागिता करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया।

देश के प्रमुख चिकित्सक वेबिनार में लेंगे हिस्सा

» पांच दिवसीय राष्ट्रीय वेब कार्यशाला का आयोजन

वाराणसी (रणभेरी)। पांच दिवसीय दिवसीय राष्ट्रीय वेब कार्यशाला 'मानसिक स्वास्थ्य के लिए परामर्शन : कुछ संभावनाएं और व्यपदेश/रणनीतियां' का आयोजन निर्देशन एवं परामर्शन प्रकोश तथा मनोविज्ञान विभाग वसंत महिला महाविद्यालय राजघाट

मनोविज्ञान विभाग), डॉ सुभाष मीणा (असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग), डॉ आकांक्षी श्रीवास्तव (असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय राजघाट) है। इसके विभिन्न सत्रों का संचालन क्रमशः कृष्णा व्यास, सौम्या श्रीवास्तव, विराली प्रकाश तथा डॉ विभा रानी (सर्टिफाइड करियर मेंटर)

हिन्दी दिवस पर ई• अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की डॉ• शुभांगी श्रीवास्तव द्वारा तैयार रिपोर्ट

दिनांक 14 सितंबर 2021 को अपराह्न 2:30 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष में अंतरराष्ट्रीय ई संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 14 सितंबर 2021 से ही हिंदी पखवारा आयोजन का भी शुभारंभ हुआ । अंतर्राष्ट्रीय ई संगोष्ठी का विषय था "वैश्वीकरण व हिंदी की चुनौतियां तथा हिंदी की वैश्विक स्थिति।" हिंदी पखवारा आयोजन के अंतर्गत 7 तरह के आयोजन आसन्न है। जिसमें १-अंतर्राष्ट्रीय ई संगोष्ठी २-हिंदी संत कवियों पर आधारित भजन प्रतियोगिता ३- निबंध लेखन प्रतियोगिता ४- हिंदी काव्य लेखन प्रतियोगिता ५-हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता ६- काव्य पाठ प्रतियोगिता और ७- समापन समारोह। समस्त कार्यक्रम की रूपरेखा व सुंदर संयोजन वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने तैयार की । अंतर्राष्ट्रीय ई संगोष्ठी का शुभारंभ वसंत कन्या महाविद्यालय के संगीत वादन विभाग की प्रोफेसर मीनू पाठक के कुलगीत के भावपूर्ण सितार वादन से हुआ। तत्पश्चात संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत- भारती के अंशों का हरिगीतिका छंद में पाठ किया गया। जिसके दूसरे भाग के छंदों की रचना संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ स्वरवंदना शर्मा ने की थी। जिसके बोल हैं " साहित्य कर्म प्रवीण सत्य साहित्य।' और पंडित माधव शुक्ल की रचना "हिंदी हिंद देश की बानी" का गायन भी संगीत विभाग की छात्राओं के द्वारा हुआ। दोनों गीतों का संगीत निर्देशन व संयोजन डॉ स्वरवंदना शर्मा ने किया।संगीत विभाग की स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा विदुषी मिश्रा, अनुभवी पटवा व पूर्व छात्रा कुमारी अमीषा ने इन गीतों की सुमधुर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि- हमें हिंदी के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेजी और अन्य सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। भाषा को लेकर राजनीति जो आज तक होती आई है वह नहीं करनी चाहिए। सभी भाषाएं देवताओं की भाषाएं है क्योंकि हम अपने सुंदर भावों को उन भाषाओं में ही प्रकट करते हैं। तत्पश्चात परास्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा प्रियंवदा सिंह ने काव्य पाठ की प्रस्तुति दी और परास्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा शिखा दुबे ने हिंदी दिवस पर अपने अभिभाषण की प्रस्तुति दी। हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने विषय प्रस्थापन किया। जिसमें उन्होंने आम आदमी के बीच हिंदी की भूमिका क्या है, हिंदी भाषा के साथ अन्य भाषाओं को कैसे जोड़ा जाए ,अनुवाद का कितना महत्व है ,ज्ञान विज्ञान और अन्य विषयों को हिंदी भाषा में अध्ययन -अध्यापन से जोड़ना कितना आवश्यक है। उन्होंने ऐसी कई महत्वपूर्ण चुनौतियो को बताया जिसके सामने हिंदी को खड़ा होना है और अपने अस्तित्व को और विस्तारित करना है। हिंदी के सामने कई संशय ,प्रश्न व चिंताएं हैं जिनके विषय में आज के समय में हम सभी को सोचना, समझना और उसमें सुधार करना है। तत्पश्चात कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ उषा शर्मा (सोफिया, बुल्गारिया) ने कहा कि प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को अपनी भाषा बना लिया है ।उन्होंने विभिन्न देशों के संस्मरण सुनाए जहां उन्होंने यात्राएं की हैं। जिसमें मॉरीशस, फिजी, कनाडा आदि देश महत्वपूर्ण रूप से काम कर रहे हैं। उन देशों का खान -पान, रहन- सहन, संस्कृति, भाषा सब कुछ हमारे देश से मिलते- जुलते है ।उन्होंने कई महत्वपूर्ण प्रवासी साहित्यकारों के नाम गिनाए जिसमें रामदेव धुरंधर, राय हीरामन ,अभिमन्यु अनंत जैसे लोग प्रवासी भारतीय साहित्य पर बहुत महत्वपूर्ण रचनाएं कर रहे हैं । विदेशों में रेडियो पर प्रसारित हिंदी कार्यक्रम और वहां की पत्रिकाओं में हिंदी भाषा में प्रकाशित लेख जो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं उसके बारे में बताया । उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी हिंदी से प्रेम करती है, वह हिंदी का सम्मान करती है और हमें इस पर सोचना चाहिए कि हम हिंदी के लिए क्या कर रहे हैं ? कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रोफेसर चंद्रकला त्रिपाठी (पूर्व प्राचार्या महिला महाविद्यालय काशी हिंदू विश्वविद्यालय) ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण उक्ति है "वसुधैव कुटुंबकम।" पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है ।इस चराचर संसार में नदियां, पर्वत वृक्ष ,पेड़- पौधे, पशु- पक्षी, मनुष्य सभी एक साथ मिलजुल कर रहते हैं और उन सब की भाषा हमारी भाषा है । हिंदी के अंदर वर्चस्व स्थापित करने

की प्रवृत्ति नहीं है और ना कभी थी। संस्कृत भाषा का समृद्ध संसार है ।भारतेंदु ने भाषा में भारतीय समाज को लोक खड़ा कर दिया। महात्मा गांधी यात्राओं से बने महापुरुष हैं और उन्होंने हिंदी भाषा को बहुत महत्व दिया है ।जब आप अपनी भाषा से प्यार करते हैं तभी आप दुनिया की भाषाओं से प्यार करते हैं। उन्होंने अपने कई रोचक संस्मरण भी सुनाए जो कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से जुड़े हुए थे। कार्यक्रम के अंत में कृतज्ञता ज्ञापन डॉ सपना भूषण ने दिया जिसमें उन्होंने सभी माननीय जनों एवं छात्राओं शिक्षक- शिक्षिकाओं, श्रोताओं सब का धन्यवाद दिया।

संपूर्ण कार्यक्रम का सुंदर और सुगठित संचालन डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

कार्यक्रम की रिपोर्ट डॉ शशि कला व डॉ ऋतंभरा तिवारी ने तैयार की।

रिपोर्ट का समाचार पत्रों में प्रेषण का कार्य डॉक्टर सपना भूषण ने किया।

समस्त रिपोर्ट का एकत्रीकरण वह संरक्षण डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव व डॉक्टर ऋतंभरा तिवारी ने किया।

संत संगीत प्रतियोगिता
रिपोर्ट

वसंत कन्या महाविद्यालय में हिंदी विभाग ने कोविड-19 की विसंगतियों के दौर में भी राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा के भाव के साथ दिनांक 14 सितंबर, 2021 से 28 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवारा का आयोजन बहुत ही सफलतापूर्वक किया।

इसकी प्रथम पुष्पांजलि के रूप में दिनांक 14 सितंबर, 2021 को संत संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसके अंतर्गत कबीर, मीरा, रैदास इत्यादि देदीप्यमान संतो के भजन व दोहो से इस प्रतियोगिता का आगाज हुआ। कुल 12 छात्राओं की प्रस्तुतियां हुई, जिसमें ऑनलाइन द्वारा भी रिकॉर्डिंग को निर्णायक मंडल द्वारा श्रवणोपरांत निर्णय किए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए हिंदी पखवारा की समन्वयक अध्यक्षा डॉ0 आशा यादव जी ने अपने वाचिक पुष्प रूप में स्वागत करते हुए हिंदी शब्दों के उत्स भावों को बड़े ही सृजनशीलता के साथ निर्णायक मंडल में छात्राओं के नामों से जोड़ते हुए हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात कही। कार्यक्रम संयोजिका डॉ0 स्वरवंदना शर्मा अध्यक्षा, संगीत गायन विभाग जी ने भी वर्तमान समय में संत साहित्य को बढ़ावा मिलना हर्ष का विषय है, यह विचार रखे। मनोविज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ0 शुभ्रा सिन्हा जी ने भी आज की युवा पीढ़ी को हिंदी भाषा से जुड़ने व नवीन शब्दावलियों को जानने की आवश्यकता पर बल दिया।

निर्णायक मंडल में डॉ0 मीनू पाठक अध्यक्षा, संगीत वाद्य सितार विभाग, डॉ0 निहारिका लाल अध्यक्षा, अंग्रेजी विभाग एवं डॉ0 पूनम पाण्डेय अध्यक्षा, इतिहास विभाग ने पूर्ण मनोयोग से इस कार्यभार का निर्वहन किया।

उपरोक्त कार्यक्रम में प्रथम स्थान पर कु0 प्राप्ति पुराणिक, द्वितीय स्थान पर कुमारी विदुषी मिश्रा एवं तृतीय स्थान पर संयुक्त रूप से कु0 अनामिका मिश्रा व अनुभवी पटवा रहीं। संपूर्ण कार्यक्रम का सूत्र संचालन डॉ० शुभांगी श्रीवास्तव ने बहुत ही सुगठित रूप में किया, जो अत्यंत सराहनीय है।

EDUCATION AS SERVICE

वसन्त कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा 'ए' श्रेणी प्राप्त

(संघटक महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।)

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

'हिन्दी पखवारा' (14 सितंबर, 2021 से 28 सितंबर, 2021)

के अंतर्गत

काव्यपाठ प्रतियोगिता

20 सितंबर 2021, अपराह्न 12.00 बजे

विषय: "हिन्दी हमारी अस्मिता"

निर्णायक मंडल के सदस्य

डॉ0 शशिकला
हिन्दी विभाग

डॉ0 नैरंजना श्रीवास्तव
अध्यक्षा, प्रा.भा.इ.सं. और पुरातत्व विभाग

डॉ0 पूर्णिमा
अंग्रेजी विभाग

सहसमन्वयक
डॉ0 ऋतम्भरा तिवारी
हिन्दी विभाग

समन्वयक
डॉ0 आशा यादव
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग

प्राचार्या
प्रो0 रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या

EDUCATION AS SERVICE

वसंत कन्या महाविद्यालय

नैक द्वारा'ए'श्रेणी प्राप्त

संघटक महाविद्यालय का. हि. वि.वि.
वाराणसी

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित

हिंदी पखवारा 14 सितंबर 2021
से 28 सितंबर 2021 के अंतर्गत

वाग्मिता प्रतियोगिता

23 सितंबर 2021 अपराह्न 2:00
बजे

विषय-" हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं
के लिए कार्य क्षेत्र और रोजगार के अवसर"

निर्णायक मंडल के सदस्य

डॉ मीनू पाठक	डॉ. पूनम पांडेय	डॉ सपना भूषण
संगीत वादन विभाग	इतिहास विभाग	हिंदी विभाग

सह समन्वयक	**समन्वयक**	**प्राचार्या**
डॉ शुभांगी श्रीवास्तव	डॉ.आशा यादव	प्रो. रचना श्रीवास्तव

Tap To Remove

दिनांक 30 सितंबर 2021 को अपराह्न 2:30 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी पखवारा समापन समारोह ई. संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसका विषय था-" स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव और हिंदी।" कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के कुलगीत से हुआ । जिसका निर्देशन संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ. स्वर वंदना शर्मा ने किया था।कुलगीत का गायन संगीत विभाग की छात्राओं (अमीषा ,कृति नंदा ,आयुषी गोस्वामी और मंजरी शुक्ला)ने किया। तत्पश्चात ऐनी बेसेंट प्रशस्ति- गीत की प्रस्तुति हुई। जिसका लेखन डाॅ. आशा यादव ने किया था और संगीत निर्देशन किया था संगीत वादन विभाग की अध्यक्षा डाॅ. मीनू पाठक ने। तबले पर संगत कर रहे थे अमित ईश्वर, हारमोनियम पर डॉ. स्वरवंदना शर्मा, मिराकस पर डॉ आशा यादव, घुंघरू पर थी डॉक्टर मीनू पाठक और एनी बेसेंट प्रशस्ति का गायन प्रस्तुत किया संगीत विभाग की छात्राओं ने। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्या ने सभी को आशिर्वचन दिया। डॉ सपना भूषण ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के विषय में बताया। मुख्य अतिथि वक्ता डॉ वर्षा रानी(सहायक आचार्य हिंदी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुसाफिरखाना, अमेठी-उत्तर प्रदेश।) महाविद्यालय की प्रबंधक, प्राचार्या, हिंदी विभाग की अध्यक्षा एवं सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं का स्वागत किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ आशा यादव ने 14 सितंबर से 28 सितंबर तक आयोजित हिंदी पखवारा आयोजन की समस्त रिपोर्ट का पाठन किया और सभी पांच प्रतियोगिताओं में प्रथम ,द्वितीय, तृतीय स्थान एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त छात्राओं के नाम की घोषणा की। उन्होंने 14 सितंबर को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ई. संगोष्ठी से जो विचार और सार तत्व निकल कर आए उसके बारे में बताया। जिसमें हिंदी भाषा का लोक भाषा से मानक भाषा बनना, विदेशों में हिंदी की स्थिति, अपने ही देश में हिंदी भाषा की लाचारी आदि बातों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हिंदी को क्लिष्ट हिंदी से सरल और सहज बनाने की आवश्यकता है। हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में अनुवाद की भूमिका क्या होती है। भारतीय संस्कृति के वसुधैव- कुटुंबकम के आदर्श की बात बताई ।संस्कृत जो देव भाषा है उसके महत्व को बताया। भारतेंदु, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों का हिंदी को आगे बढ़ाने में जो योगदान है उसके बारे में बताया। भारतवासी जब हिंदी से प्रेम करेंगे तभी वह दूसरी अन्य भाषाओं से भी प्रेम करेंगे। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं और समापन समारोह का पूरा विवरण दिया। तत्पश्चात स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्राओं प्राप्ति पुराणिक और विदुषी मिश्रा द्वारा सुमधुर भजन की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम की अगली कड़ी में मुख्य अतिथि वक्ता डॉ० वर्षा रानी ने अपना वक्तव्य दिया। जिसमें उन्होंने ऐनी बेसेंट जयंती की पूर्व संध्या पर उन्हें नमन किया। प्राचार्या, पूर्व प्राचार्या, विशिष्ट अतिथि, डॉ. स्वरवंदना शर्मा ,डॉ आशा यादव ,डॉ शशि कला ,डॉक्टर सपना भूषण सभी का अभिनंदन किया और कहा कि इस पखवारे के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने को मिला है तथा आज के समापन समारोह का विषय बहुत ही प्रासंगिक और समीचीन है । आत्मनिर्भर भारत और आजादी का अमृत महोत्सव जो की आजादी के 75 वर्ष पूरा होने पर मनाया जा रहा है। इसका ऐतिहासिक महत्व क्या है। अमृत महोत्सव शब्द कहां से आया ?प्रधानमंत्री द्वारा जो घोषणा की गई की 12 मार्च 2021 से 15 अगस्त 2022 तक यह महोत्सव अनवरत चलता रहेगा। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में भारत के गौरवशाली इतिहास और जिन पांच स्तंभों के बारे में बताया था और इससे संबंधित वेबसाइट लॉन्च की थी इन सब के बारे में बताया। आजादी का यह अमृत महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है

। हिंदी एक भाषा नहीं बल्कि भारतीयता की पहचान है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का सबसे अच्छा माध्यम हमारी हिन्दी भाषा ही है । उन्होंने कहा की किसी देश का संस्कार तभी जीवित रहता है जब वहां की भाषा जीवित रहती है। भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृतियों का समावेश है। हिंदी में अनेक भारतीय भाषाओं के शब्द विद्यमान है। भारतीय संस्कृति और इतिहास में जिन महापुरुषों ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में जो योगदान दिया उसके बारे में बताया। विभिन्न पाश्चात्य विचारकों के हिंदी के बारे में जो कथन हैं जैसे- सी.टी. मेटकाॅफ, टॉमस रोपक, विलियम केरी, एच. टी. कॉलबुक आदि के हिंदी भाषा के संदर्भ में जो कथन है उनके बारे में बताया।आजादी मिलने के पूर्व जो समाज सुधार आंदोलन चलाए गए उनका पूरा विवरण दिया । राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के इतिहास को बताया। सी.राज गोपालाचारी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए जो कार्य किए नेहरू ने 1928 में जो सिफारिश भेजी थी। सुभाष चंद्र बोस ,ऐनी बेसेंट, तिलक, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी इन सभी का हिंदी को आगे बढ़ाने में जो योगदान हैं इसके विषय में बताया। हमने एकता के बल पर ही देश को स्वतंत्र कराया था और यही भाषिक एकता आज भी हमारे देश को विकसित होने में योगदान देगी। हिंदी बोलने, पढ़ने, लिखने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि वही हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा है। हिंदी विभाग की अध्यक्षा एवं समस्त हिंदी विभाग की शिक्षिकाओं, महाविद्यालय के सदस्यों को बधाई और शुभकामनाएं दी । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया की स्वतंत्रता पूर्व सरकारी कामकाज की भाषा उर्दू और फारसी थी। देवकीनंदन खत्री के उपन्यास चंद्रकांता संतति को पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी सीखी ये बात बहुत महत्वपूर्ण है। भाषा को बनाने में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान होता है। आजकल के बच्चे इंटरनेट की भाषा बोलते हैं जबकि हमारी भाषा में उर्दू और अन्य दूसरी भारतीय भाषाओं के शब्द मिले होते हैं। हम आजादी के अमृत महोत्सव को अनेक स्तरों पर माना रहे हैं। छात्राओं को इसके महत्व को समझना चाहिए। हम सबसे ज्यादा सहज अपनी मातृभाषा बोलने में होते हैं। हमारी संस्कृति दूसरे देशों की संस्कृति से भिन्न है। हिंदी भाषा को आधार साहित्य ने प्रदान किया। 1947 के पहले भाषा के नाम पर एकता थी परंतु आजादी के बाद हम भाषा के नाम पर बंट गए। इसलिए हम सभी को विचार करना चाहिए की अन्य भाषाओं का कोई दिवस नहीं मनाया जाता लेकिन हम आज भी हिंदी दिवस माना रहे हैं। इसका क्या कारण है ?उन्होंने इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए विभागाध्यक्षा और समस्त हिंदी विभाग की शिक्षिकाओं को बधाई एवं आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर शशिकला ने सभी के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। जिसमें उन्होंने मुख्य अतिथि वक्ता, विशिष्ट अतिथि, कार्यक्रम की अध्यक्षा- प्राचार्या, संगीत विभाग की अध्यक्षा डॉ. स्वर वंदना शर्मा, तबले पर संगत कर रहे सौम्याकांति मुखर्जी, डॉ मीनू पाठक, ई. संगोष्ठी में सम्मिलित हुई पूर्व प्राचार्या डॉक्टर कुसुम मिश्रा , डॉ बीना सिंह , पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ तृप्ति रानी जायसवाल, संचालन कर रही डॉक्टर ऋतंभरा तिवारी और रिपोर्ट लेखन के लिए डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव को हार्दिक धन्यवाद दिया।

समस्त कार्यक्रम का सुंदर संचालन डॉक्टर ऋतंभरा तिवारी ने किया।

समस्त कार्यक्रम की संक्षिप्त एवं विस्तृत रिपोर्ट लेखन का कार्य डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

डॉ० शुभांगी श्रीवास्तव

वसंत कन्या महाविद्यालय

हिंदी पखवारा आयोजन

दिनांक (14 सितंबर 2021 से 28 सितंबर 2021)

हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता की रिपोर्ट

दिनांक 23 सितंबर 2021 को अपराह्न 2:00 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित हिंदी पखवारा कार्यक्रम के अंतर्गत 'ई. वाग्मिता प्रतियोगिता' का आयोजन हुआ। वाग्मिता प्रतियोगिता का विषय था।-" हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं के लिए कार्य क्षेत्र एवं रोजगार के अवसर।" जिसमें कुल 14 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। निर्णायक मंडल की सदस्य थी।-

१- डॉक्टर मीनू पाठक (संगीत वादन विभाग)

२- डॉक्टर पूनम पांडे(इतिहास विभाग)

३- डॉक्टर सपना भूषण (हिंदी विभाग)

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने गणेश वंदना से किया। तत्पश्चात उन्होंने सभी निर्णायक मंडल के सदस्यों, कार्यक्रम की समन्वयक हिंदी विभाग की अध्यक्षा - प्रोफेसर आशा यादव एवं अन्य सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं, प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा प्रतिभागियों को प्रतियोगिता की नियमावली बताई।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में सभी १४ प्रतिभागियों ने क्रमशः अपनी प्रस्तुतियां दी। जो की उनके उत्साह और सच्चे परिश्रम का परिणाम थी। सभी प्रतिभागियों की प्रस्तुति के बाद निर्णायक मंडल की तीनों सदस्यों ने छात्राओं को प्रोत्साहित किया एवं उनकी प्रस्तुतियों पर यथोचित टिप्पणीयां दी।

कार्यक्रम की समन्वयक प्रोफेसर आशा यादव ने छात्राओं को अपना आशीर्वचन दिया और प्रतियोगिता में ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातों को बताया। जिसमें-

१-व्याकरण शुद्धि पर ध्यान देना ।

२-ध्वनि संचालन कैसा हो।

३- वाग्मिता प्रस्तुति के समय उनकी मुद्रा कैसी होनी चाहिए।

४-स्वर संबंधी प्रबंधन कैसा होना चाहिए।

५-शब्दों का उच्चारण शुद्ध होने का क्या महत्व है ।

६-तथ्य गरिमापूर्ण होना चाहिए और सृजनशीलता का भी समावेश होना चाहिए।

निश्चित रूप से ये निर्देश सभी प्रतिभागियों व अन्य छात्राओं के लिए भी बहुत लाभकारी साबित होंगे।

कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव (सह समन्वयक) ने सभी का धन्यवाद दिया। जिसमें निर्णायक मंडल की सदस्यों, हिंदी विभाग की अध्यक्षा अन्य सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं , टेक्निकल सहयोग के लिए चंद्रकांत जी, सभी प्रतिभागियों और श्रोताओं का धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में कुल 90 लोग उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सुचारु और सुगठित रूप से संचालन और रिपोर्ट लेखन डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

रिपोर्ट

दिनांक ~~26~~ 30 अक्टूबर, 2021 को अपराह्न 2:00 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय कमच्छा, वाराणसी के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी पखवारा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सितार विभाग की अध्यक्षा, प्रो. मीनू पाठक द्वारा महाविद्यालय के कुल गीत 'नमन मां वसंत देवी जगत वंदिते' की सितार वाद्य प्रस्तुति से हुआ। तत्पश्चात संगीत गायन विभाग की अध्यक्षा डॉ. स्वर वंदना शर्मा के निर्देशन में छात्राओं (कु. अमीषा, विदुषी मिश्रा और अनुभवी पटवा) ने महाकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित हिंदी प्रशस्ति गीत- 'मानस भवन में आए जिसकी उतारे आरती' का सुमधुर गायन प्रस्तुत किया। तदुपरांत संत संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. प्राप्ति पुराणिक ने अपने कलकण्ठों से मीराबाई द्वारा रचित भजन 'मिलता जा रे, मिलता जा रे' की कर्णप्रिय तथा अत्यन्त सुमधुर प्रस्तुति की। उसी क्रम में काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. प्रगति चौबे द्वारा 'हिंदी हमारी अस्मिता' विषय पर काव्य पाठ 'बनी द्रौपदी खड़ी है हिंदी, इंग्लिश खींच रही है चीर' की सुन्दर प्रस्तुति की गई। काव्य पाठ प्रस्तुति के क्रम में काव्य लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त परास्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा शिखा दुबे द्वारा 'गंगा नदी' शीर्षक कविता का अत्यन्त मधुर स्वर में काव्य पाठ प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में कार्यक्रम की मुख्य पुरस्कर्ता तथा महाविद्यालय की प्रबंधक अभिभावक स्वरूपा श्रीमती उमा भट्टाचार्या ने अपना आशीर्वचन देते हुए कहा कि हिन्दी तभी पूर्ण रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी जब कि हिन्दी के प्रति हमारे भीतर सम्मान और गौरव का भाव होगा। उन्होंने हिंदी पखवारा के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति की प्रशंसा करते हुए उन्हें साधुवाद दिया। तत्पश्चात महाविद्यालय की प्राचार्य विदुषी प्रो. रचना श्रीवास्तव ने उद्बोधन वक्तव्य देते हुए कहा कि प्रतियोगिता में सहभागिता का भी एक आनंद होता है और जब तक जीवन में प्रतियोगिता और संघर्ष ना हो तब तक जीवन का आनंद नहीं है। जब प्रतिभागी संघर्ष तथा मंथन करता है तभी अमृत की प्राप्ति होती है। तत्पश्चात महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्या, महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव और हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. आशा यादव द्वारा हिंदी पखवारा के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त छात्राओं को प्रमाण पत्रों और पुरस्कारों का वितरण किया गया।

अंत में आभार ज्ञापन संचालिका डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव ने किया, जिसमें उन्होंने महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्या, महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव, हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. आशा यादव, सितार विभाग की अध्यक्षा प्रो. मीनू पाठक, संगीत गायन विभाग की अध्यक्षा डॉ. वंदना स्वरवंदना शर्मा, प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल के सदस्यों (प्रो. पूनम पाण्डेय, प्रो. मीनू पाठक, डॉ. सपना भूषण, डॉ. शशिकला, डॉ. अंशु शुक्ला, डॉ. शुभ्रा सिन्हा, डॉ. नैरंजना श्रीवास्तव, डॉ. पूर्णिमा सिंह, डॉ. सुप्रिया सिंह, प्रो. कल्पलता डिमरी), संगीत विभाग की छात्राओं, आयोजन में प्रस्तुति करने वाली छात्राओं, सुधी श्रोता गणों, छात्र-छात्राओं तथा महाविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का कुशल और सुसंगठित संचालन डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव ने किया तथा डॉ. ऋतम्भरा तिवारी ने समग्र आयोजन की विस्तृत एवं संक्षिप्त सारगर्भित रिपोर्ट लेखन का कार्य किया।

दिनांक 18 नवम्बर , 2021 को अपराहन 2:30 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय ,कमच्छा, वाराणसी के हिंदी विभाग द्वारा "नई कहानी और युगीन बोध" विषय पर द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई.संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें विशिष्ट मुख्य वक्ता के रूप में प्रो.आनंद वर्धन शर्मा विजिटिंग प्रोफेसर,ICCR Chair भारत विद्या विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय ,वल्गारिया आमंत्रित रहें ।

कार्यक्रम का शुभारंभ सितार वादन विभाग की अध्यक्षा, प्रो. मीनू पाठक द्वारा महाविद्यालय के कुल गीत 'नमन मां वसंत देवी जगत वंदिते' की सुरम्य सितार वाद्य प्रस्तुति से हुआ । तत्पश्चात प्रो.आशा यादव द्वारा सुंदर शब्द योजना से गठित अद्वितीय एनी बेसेंट की प्रशस्ति गीत का सुमधुर गायन सितार वादन विभाग की अध्यक्षा प्रो.मीनू पाठक के निर्देशन में संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया ।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय की कर्मठ और विदुषी प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि सॉफ्ट पावर के रूप में भारत देश माना जाता है । डॉ.एनी बेसेंट ने शिक्षा एवं संस्कार का जो वृक्ष लगाया उसे महाविद्यालय और अधिक विकसित व फलीभूत कर रहा है। नई कहानी के संदर्भ में स्त्री लेखिकाओं ,दलित साहित्य एवं स्त्री विमर्श पर भी उन्होंने गंभीर चर्चा की तथा मन्नू भंडारी का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि भी दी। तत्पश्चात महाविद्यालय की प्रबंधक आदरणीय श्रीमती उमा भट्टाचार्या ने अपना आशीर्वचन देते हुए मुख्य अतिथि प्रो.आनंद वर्धन शर्मा के संदर्भ में कहा कि विदेश में रहकर जहां हर जगह अंग्रेजी का ही बोलबाला है वहां हिंदी को अपनी एक पहचान दिलाने और उसका विस्तार करने का वह महत्वपूर्ण कार्य कर रहें हैं । जो अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए हिंदी विभाग की कुशल एवं बहुविध प्रतिभा संपन्न विभागाध्यक्षा प्रो.आशा यादव ने विषय का प्रतिस्थापन करते हुए कहा कि नई कहानी जीवन के यथार्थ को बड़ी प्राणवत्ता के साथ रखने का प्रयास करता है ।आंदोलन के रूप में छठे दशक की उपलब्धि नई कहानी कही जाती है। छठे दशक की कहानी लिबाज और लिहाज से नए रूप में दिखाई देती है। जैसे -जैसे सामाजिक परिवेश बदलता है वैसे- वैसे मानव की सोच और कहानी का स्वरूप भी परिवर्तित होता है। वर्तमान समय में मानव ने जो अपने नैतिक मूल्यों का हनन किया है उससे समाज एवं साहित्य खंडित व बिखरे हुए रूप में दिखाई देती है। जीवन की विडंबनाओ को नए कलेवर के साथ प्रस्तुत करते हुए नई कहानी नए रूप में दिखाई देती है। तत्पश्चात विशिष्ट मुख्य वक्ता प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक रीति से अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज कहानी बोलने लगी है। वह कहानी जो स्वयं बोले अर्थात् कहानी के पात्र साकार रूप में कहानीकार के विचारों को प्रकट करें, कहानीकार को कोई विशेष टीका-टिप्पणी न करनी पड़े। वही कुशल व सफल कहानीकार है। नई कहानी के रचना शैली ,कथ्य, जीवन शैली और जीवन बोध सभी में नवीनता देखने को मिलती है। उन्होंने नई कहानी के कहानीकारों प्रेमचंद ,शिव प्रसाद सिंह, हरिशंकर परसाई, मोहन राकेश, नामवर सिंह, दुष्यंत कुमार ,धूमिल, मुक्तिबोध ,कमलेश्वर ,मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, राजेंद्र यादव ,भीष्म साहनी ,मार्कण्डेय एवं रेणु आदि के महत्वपूर्ण कहानियों की चर्चा करते हुए नई कहानी को हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान करने वाला बताया। अंत में डॉ. सपना भूषण ने मुख्य

दिनांक-
22.11.21

ई. अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के दूसरे दिन की विस्तृत रिपोर्ट - डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव

दिनांक 20 नवंबर 2021 को पूर्वाहन 11:00 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा द्वि दिवसीय ई अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। जिसके दूसरे व्याख्यान के अंतर्गत 'स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी' विषय पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रोफेसर श्रद्धा सिंह मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थी। कार्यक्रम का शुभारंभ कुल गीत के सितार वादन प्रस्तुति से हुआ। जिसे प्रस्तुत किया महाविद्यालय की संगीत वादन विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर मीनू पाठक ने तत्पश्चात एनी बेसेंट प्रशस्ति की प्रस्तुति हुई। जिसकी रचना की है हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने और संगीत निर्देशन किया है प्रोफेसर मीनू पाठक ने। कार्यक्रम को आगे बढ़ते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने महाविद्यालय की प्रबंधक महोदया श्रीमती उमा भट्टाचार्या, मुख्य अतिथि प्रोफेसर श्रद्धा सिंह, महाविद्यालय की समस्त शिक्षिकाओं, छात्राओं सभी का स्वागत किया।उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता से पूर्व सरकारी कामकाज की भाषा उर्दू -फारसी थी।राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।1857 की क्रांति के बाद से हिंदी भाषा को भारत में महत्व दिया गया। बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यास चंद्रकांता संतति को पढ़ने के लिए उस समय कई लोगों ने हिंदी सीखी।जिससे कि हिंदी सर्वग्राह्य बनी। लॉर्ड मैकाले के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट ने जनता पर नकारात्मक प्रभाव डाला। इसके बाद से ही राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत तेज हो गई।हिंदी भाषा ने लोगों को आपस में जोड़ने का काम किया।

महाविद्यालय की हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने विषय प्रस्तवन करते हुए कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति के निमित्त 1857 से 1947 के हिंदी साहित्य ने स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया है वह अतुलनीय है। हिंदी के साधकों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति में जो प्रयास किए गए वह मील का पत्थर साबित हुए। हिंदी की समस्त विधाओं ने इसमें अपना योगदान दिया है। हिंदी ने शोषण के विरोध में विद्रोही तेवर अपनाया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिली शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्यामलाल गुप्त, जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, रामधारी सिंह दिनकर, मदन मोहन मालवीय, रविंद्र नाथ टैगोर, बंकिम चंद्र चटर्जी इन सभी रचनाकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी रचनाओं के द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। उन्होंने जयशंकर प्रसाद की पंक्तियां -"अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।" और "हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती ,स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"आदि पंक्तियों का उदाहरण भी दिया। हिंदी सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया है उसके विषय में बताया। सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री आदि स्वतंत्रता सेनानियों के प्रसिद्ध नारों की चर्चा की।

कार्यक्रम की मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता प्रोफेसर श्रद्धा सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारा देश आज भी राष्ट्रभाषा विहीन है ।आज भी हमारे देश में हिंदी के विद्वान हो या छात्र हो वे शुद्ध हिंदी का प्रयोग नहीं करते। हिंदी का महीना, पहाड़े इन सब को हम भूलते जा रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के समय तीन बातें महत्वपूर्ण थी। स्वदेशी का प्रयोग, स्वभाषा का प्रयोग और स्वराज्य प्राप्ति। स्वराज्य तो हमें प्राप्त हो गया लेकिन स्वदेशी और स्वभाषा का महत्व पीछे छूट गया । हमारे ऊपर अंग्रेजी हावी होती जा रही है। अपनी भाषा के बगैर कोई भी देश गूंगा होता है। भाषा के द्वारा ही संस्कृति जीवित रहती है। 1857 के संघर्ष में सभी अपने-अपने ढंग से स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई लड़ रहे थे। उसमें कोई एक्य नहीं था। भावनात्मक एकता के लिए एक सामान्य भाषा की जरूरत को महसूस किया गया। हिंदी सरल, सहज और व्यापक भाषा है। पूरे देश को भावनात्मक रूप से एक सूत्र में बांधने का कार्य हिंदी ने किया। अपनी व्यापकता एवं सरलता के कारण ही हिंदी राजभाषा बनी। हिंदी का आदिकालीन साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाता है । दक्षिण भारत में शंकराचार्य ,माध्वाचार्य इन सभी ने हिंदी में गीत लिखे ।मोटूरी सत्यनारायण को दक्षिण भारत का राजर्षि टंडन कहा जाता है। दक्षिण हिंदी प्रचार सभा ,केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा ,राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा आदि संस्थानों ने हिंदी के स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रयोजनमूलक हिंदी के जन्मदाता मोटूरी सत्यनारायण है। संत साहित्य का प्रचार पूरे देश में हुआ। तुलसीदास ने संस्कृत भाषा में नहीं बल्कि लोक भाषा अवधी में रामचरितमानस लिखकर पूरे देश को एक सूत्र में बांधा। अंग्रेज यह समझ चुके थे कि भारतवासियों से संपर्क करना है तो उन्हें हिंदी सीखनी पड़ेगी। जॉन गिल क्राइस्ट हिंदुस्तानी के समर्थक थे। महात्मा गांधी ने नवजीवन पत्रिका का प्रकाशन 1921 से हिंदी भाषा में किया। एनी बेसेंट ने मातृभाषा में शिक्षा का प्रचार- प्रसार किया। आजादी के 75 वर्ष हो चुके हैं हम स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं लेकिन आज भी हिंदी की स्थिति पर विचार करना जरूरी है ।स्वतंत्रता के बाद राजनीति ने जोर पकड़ा प्रादेशिकता मजबूत हुई। भाषा की राजनीति शुरू हुई और हिंदी अभी तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई। हम सभी को चाहिए की हम हिंदी भाषा का सरल सहज रूप में प्रयोग करें ।अर्थशास्त्र, गणित जैसे अन्य विषयों का भी हिंदी भाषा में पठन-पाठन होना चाहिए। हिंदी के शब्दकोष का विकास हो तभी हम हिंदी के लिए अपना कुछ योगदान दे सकेंगे।

कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर शशि कला ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। जिसमें उन्होंने प्राचार्या, प्रबंधक महोदया विभागाध्यक्षा , संचालिका अन्य सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं, छात्राओं सभी का धन्यवाद दिया।

संपूर्ण कार्यक्रम का सुसंगठित व सुव्यवस्थित संचालन डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

कार्यक्रम के रिपोर्ट लेखन का कार्य डॉक्टर सपना भूषण और डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

कार्यक्रम में कुल 99 लोग उपस्थित रहे।

दिनांक 20 नवम्बर , 2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय ,कमच्छा, वाराणसी के हिंदी विभाग द्वारा" स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी" विषय पर द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई.संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें विषय विशेषज्ञ मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. श्रद्धा सिंह, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ,हिंदी विभाग आमंत्रित रहीं ।

कार्यक्रम का शुभारंभ सितार वादन विभाग की अध्यक्षा, प्रो. मीनू पाठक द्वारा महाविद्यालय के कुल गीत 'नमन मां वसंत देवी जगत वंदिते' की सुरम्य सितार वाद्य प्रस्तुति से हुआ । तत्पश्चात प्रो.आशा यादव द्वारा रचित अद्वितीय एनी बेसेंट की प्रशस्ति गीत का सुमधुर गायन सितार वादन विभाग की अध्यक्षा प्रो.मीनू पाठक के निर्देशन में संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया ।कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय की संरक्षिका कर्मठ और विदुषी प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि 1857 की क्रांति से ही हिंदी के प्रचार एवं प्रसार की भी क्रांति हमें दिखाई देती है स्वतंत्रता सेनानियों ने जब हिंदी के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए साधारण जनता को जागृत करने का प्रयास किया तभी अंग्रेजों ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट की स्थापना करके नकारात्मक तत्व के रूप में देशज भाषा पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप सकारात्मक रूप से हिंदी प्रेस का उत्थान हुआ और हिंदी भाषा ने पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का का कार्य किया।उन्होंने देवकीनंदन खत्री की प्रसिद्ध कृति चंद्रकांता संतति की चर्चा करते हुए कहा कि इस कृति को पढ़ने के लिए ही कई लोगों में हिंदी सीखने की प्रबलता आई । आगे उन्होंने कहा कि कोई भी विषय पर आधारित व्याख्यान छात्राओं में विषयवार दृष्टिकोण उत्पन्न करके उन्हें भविष्य के लिए तैयार करती है। अतः ऐसे ज्वलंत विषयों पर व्याख्यान होना अति आवश्यक है । महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्य ने भी अपना आशीर्वचन देते हुए आयोजन समिति का उत्साह-वर्धन किया ।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए हिंदी विभाग की कुशल एवं बहुविध प्रतिभा संपन्न विभागाध्यक्षा प्रो.आशा यादव ने विषय का प्रस्थापन करते हुए कहा कि 1857 की क्रांति लेकर 1947 तक सुदीर्घ कालावधि में बहुविध साहित्य का स्वतंत्रता आंदोलन व हिंदी विकास में अतुलनीय योगदान रहा है ।हिंदी भाषा की सभी विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास,नाटक ,निबंध ,रिपोतार्ज, यात्रा वृतांत, रंगमंच, काव्य, गीत एवं सूत्रात्मक नारो ने स्वतंत्रता की अलख जगाने का कार्य किया। सर्वप्रथम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन के माध्यम से सामान्य-जन के साथ होने वाले शोषण, अत्याचार, अन्याय एवं उपेक्षा को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करके सामान्य जन को अंग्रेजी शासकों के प्रति विद्रोही तेवर अपनाते हुए उद्वेलित एवं आंदोलित करने का सराहनीय प्रयास किया। प्रेमचंद जो स्वतंत्रता आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं । उनकी रचना -सोजे वतन जो विस्फोटक की भांति क्रांतिकारी विचारों को अंजाम दे रही थी। साथ ही दैनिक पत्र- पत्रिकाओं जैसे कवि वचन सुधा , हरिश्चंद्र मैगजीन, बालबोधिनी ,नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिंदी प्रदीप, सरस्वती पत्रिका ,स्वदेश पत्र तथा आज पत्र के योगदान की भी वृहद चर्चा की। तत्पश्चात विशिष्ट मुख्य वक्ता प्रो. श्रद्धा सिंह ने विषय विशेषज्ञ के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि अखिल भारतीय राज्य भाषा सम्मेलन से ही राजभाषा का प्रारंभ हुआ । हमारे लिए यह अत्यंत चिंता का विषय है

कि आज आजादी के 75 साल होने के पश्चात भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित नहीं किया जा सका।स्वदेशी, स्वभाषा व स्वराज्य इन तीनों में स्वराज्य तो हमें मिल गया किंतु स्वदेशी व स्वभाषा का अभाव देखने को मिलता है । उन्होंने मोटोरू सत्यनारायण के महत्वपूर्ण योगदान की भी चर्चा की, कि किस प्रकार से उन्होंने हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उन्होंने बताया कि मोटोरू ने ही दक्षिण में राज्य भाषा प्रचार समिति,दक्षिण हिंदी प्रचार सभा तथा राजभाषा हिंदी प्रचार सभा आदि की स्थापना करके हिंदी को राज्य भाषा का स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। प्रयोजनमूलक हिंदी की शुरुआत भी इन्होंने ही किया ।अंत में उन्होंने कहा कि हमें संस्कृतनिष्ट हिंदी के व्यवहार से बचते हुए सरल और सहज हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए ।भाषा बहते हुए नीर के समान है जो सारी भाषाओं को अपने में समाहित करते हुए आगे बढ़ती है अतः हिंदी में कई भाषाओं का समावेश होना स्वाभाविक ही है । डॉ. शशि कला ने समस्त सम्माननीय शिक्षक गणों एवं श्रोता गण को साधुवाद दिया। इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ तृप्ति रानी जयसवाल, डॉ. बिना सिंह, प्रो. मीनू पाठक ,डॉ.कमला पाण्डेय, प्रो.स्वर वंदना शर्मा एवं अन्य सम्माननीय शिक्षक गण उपस्थित रहें। कार्यक्रम का कुशल एवं सुंदर निर्देशन व संयोजन विभागाध्यक्षा प्रो.आशा यादव ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम का सुंदर व सुगठित संचालन डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव ने किया। समग्र आयोजन की विस्तृत एवं सारगर्भित रिपोर्ट लेखन डॉ सपना भूषण ने किया। कार्यक्रम में कुल 94 श्रोता गण उपस्थित रहें।

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित
द्विदिवसीय ई. अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान-श्रृंखला
द्वितीय व्याख्यान : कार्यक्रम विवरण

20 नवंबर, शनिवार, 2021 ; पूर्वाह्न 11.00 बजे

विषय : 'स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी'

विषय विशेषज्ञ : प्रो. श्रद्धा सिंह

1. कुल गीत : प्रो. मीनू पाठक द्वारा सितारवाद्य प्रस्तुति का ऑडियो वादन
2. एनी बेसेंट प्रशस्ति : प्रो. आशा यादव द्वारा रचित गीत प्रो. मीनू पाठक के निर्देशन में छात्राएँ
3. स्वागत वक्तव्य : प्रो. रचना श्रीवास्तव, प्राचार्या
4. विषय प्रस्थापन : प्रो. आशा यादव, विभागाध्यक्षा
5. व्याख्यान : प्रो. श्रद्धा सिंह, कला संकाय, हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय
6. आभार : डॉ. शशिकला

संचालन : डॉ. ऋतम्भरा तिवारी

रिपोर्ट लेखन : डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव

उक्त आयोजन में आप सभी आदरणीय विद्वत्-जन सादर आमन्त्रित हैं।

प्रो. आशा यादव
संयोजिका
विभागाध्यक्षा
वसंत कन्या महाविद्यालय

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित
द्विदिवसीय ई. अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान-श्रृंखला
प्रथम व्याख्यान : कार्यक्रम विवरण

18 नवंबर, वृहस्पतिवार, 2021 ; अपराह्न 2.30 बजे

विषय : 'नयी कहानी और युगीन बोध'

विषय विशेषज्ञ : प्रो. आनंद वर्धन

1. कुल गीत : प्रो. मीनू पाठक द्वारा सितारवाद्य प्रस्तुति का ऑडियो वादन
2. एनी बेसेंट प्रशस्ति : प्रो. आशा यादव द्वारा रचित गीत प्रो. मीनू पाठक के निर्देशन में छात्राएँ
3. स्वागत वक्तव्य : प्रो. रचना श्रीवास्तव, प्राचार्या
4. विषय प्रस्थापन : प्रो. आशा यादव, विभागाध्यक्षा
5. व्याख्यान : प्रो. आनंद वर्धन, विज़िटिंग प्रोफेसर, ICCR Chair, भारत विद्या विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय, बल्गारिया
6. आभार : डॉ. सपना भूषण

संचालन : डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव

रिपोर्ट लेखन : डॉ. ऋतम्भरा तिवारी

उक्त आयोजन में आप सभी आदरणीय विद्वत्-जन सादर आमन्त्रित हैं।

प्रो. आशा यादव
संयोजिका
विभागाध्यक्षा
वसंत कन्या महाविद्यालय

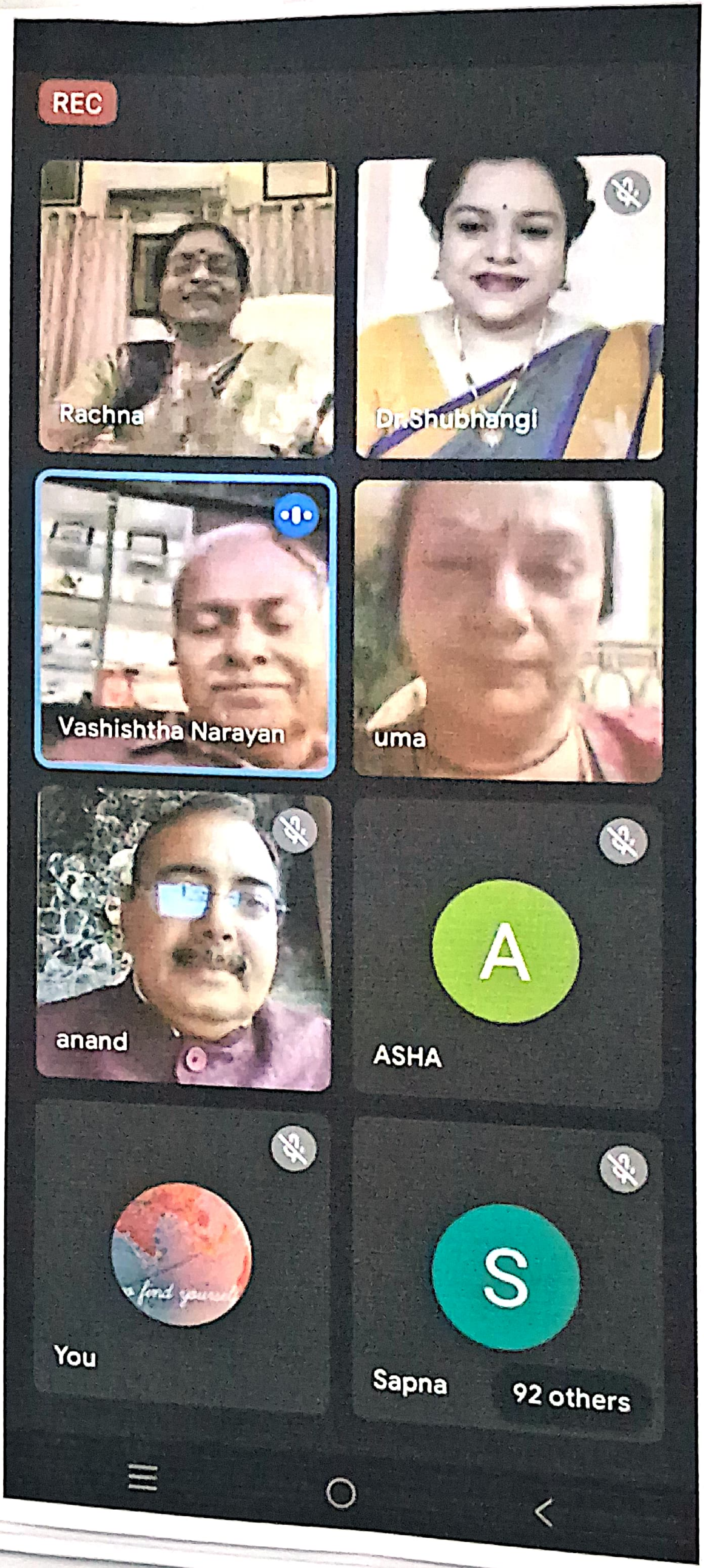
REC
Rachna
Dr.Shubhangi
Vashishtha Narayan
uma
anand
ASHA
A
You
Sapna
S
92 others

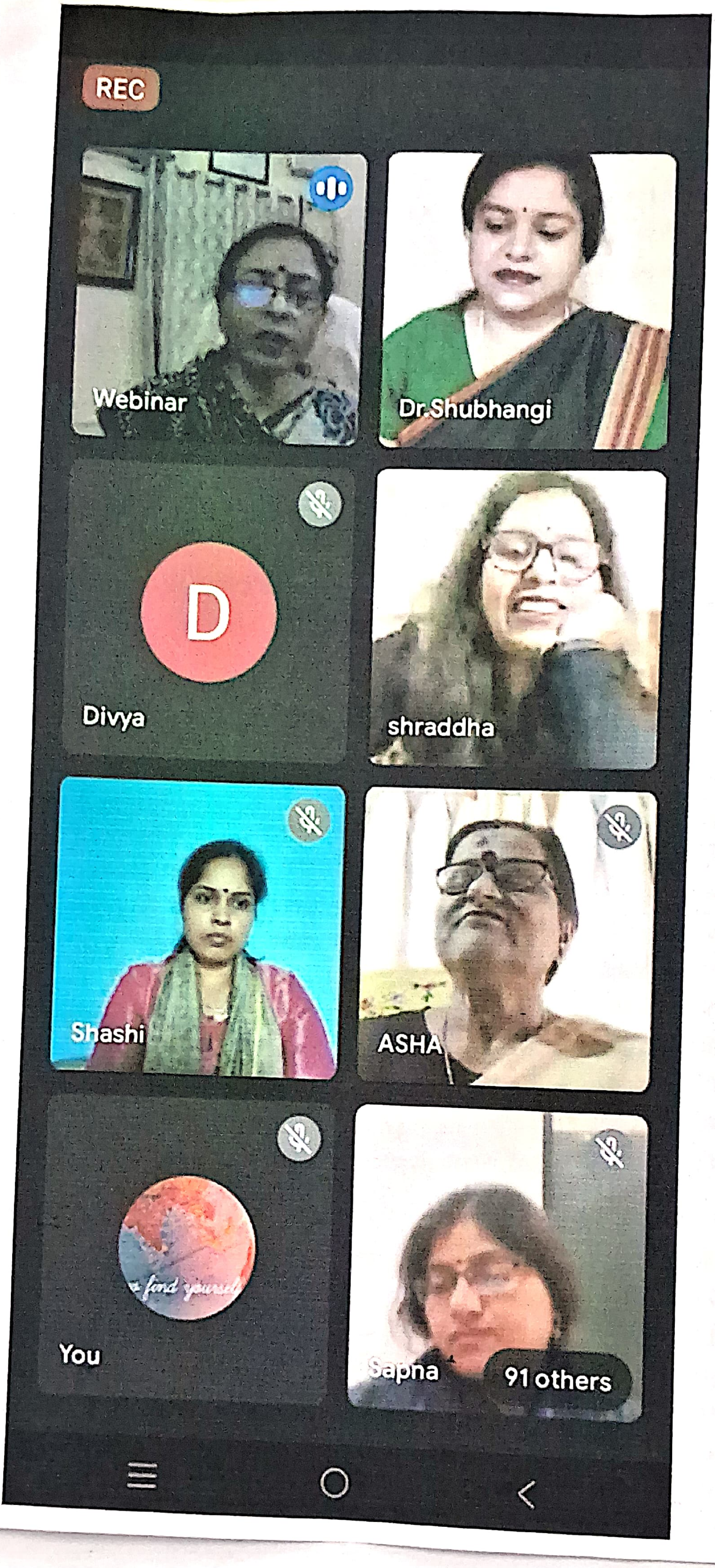
REC
Webinar
Dr.Shubhangi
D
Divya
shraddha
Shashi
ASHA
You
Sapna
91 others

18 नवंबर 2021 ई. अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला का प्रथम दिन का डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव द्वारा तैयार रिपोर्ट

दिनांक 18 नवंबर 2021 को अपराह्न 2:30 बजे वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। जिसका विषय था "नई कहानी और युगीनबोध" इस विषय-पर व्याख्यान देने के लिए बल्गारिया के सोफिया विश्वविद्यालय के भारत विद्या विभाग से विजिटिंग प्रोफेसर श्री आनंद वर्धन शर्मा मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में कार्यक्रम में मौजूद थे। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के कुल गीत के सुमधुर सितार वादन प्रस्तुति से हुआ। जिसका वादन किया था संगीत वादन विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर मीनू पाठक ने। तत्पश्चात ऐनी बेसेंट प्रशस्ति की प्रस्तुति हुई। जिसमें महाविद्यालय की संगीत विभाग की छात्राओं ने अपनी सुंदर प्रस्तुति दी।एनी बेसेंट प्रशस्ति की रचना हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने की थी और संगीत निर्देशन था प्रोफेसर मीनू पाठक का। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य दिया। जिसमें उन्होंने प्रोफेसर आनंद वर्धन शर्मा, महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्य एवं अन्य सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं , छात्राओं सभी श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि-प्रोफेसर शर्मा भारतीय संस्कृति को विदेशों में भी जीवंत कर रहे हैं और अन्य देशों को भारत की संस्कृति से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं । उन्होंने नई कहानी की प्रसिद्ध कथाकार मन्नू भंडारी को स्मरण कर श्रद्धांजलि दी।हिंदी की प्रसिद्ध महिला कथाकारों के बारे में भी बताया। नई कहानी के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका के बारे में बताया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय की प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्य ने हिंदी विभाग की समस्त शिक्षिकाओं को और वसंत परिवार के समस्त सदस्यों को आशिर्वचन दिया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर आशा यादव ने विषय प्रस्थापन किया। उन्होंने हिंदी कहानी की विशेषताओं के बारे में बताते हुए कहा कि- नई कहानी का यथार्थ उचित संदर्भ में मानव समाज के मूलभूत तत्वों का अनुकरण करता है। उन्होंने प्रसिद्ध आलोचकों और समीक्षकों के महत्वपूर्ण कथनों को बताते हुए कहा कि- नई कहानी पुरानी कहानी का ही विकसित रूप है। नई कहानी का बीज वपन प्रेमचंद के काल में होता है। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर ,निर्मल वर्मा ,हरिशंकर परसाई आदि ख्याति प्राप्त कथाकारों की रचना के द्वारा समाज में साहित्य के प्रति जो चेतना जागृत हुई उसके विषय में बताया ।उन्होंने कहा कि - 1962 के बाद राष्ट्रीय स्तर पर कथाकारों का मोह- भंग हुआ। व्यावसायिकता और नेतागिरी की प्रवृत्ति ने नई कहानी को कमजोर किया है। नई पीढ़ी स्वतंत्रता के समय वयस्क हो रही थी नई कहानी का युगबोध प्रत्येक युवा की अपनी दृष्टि और सृष्टि होती है। कोई भी साहित्य युग निरपेक्ष नहीं होता । जैसे-जैसे सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य बदला है कहानी की बाहरी सीमाएं भी बदली हैं कहानीकार अमरकांत ने नए परिवेश से स्वयं को प्रतिबद्ध रखा है। वे खुली आंखों से देखते हैं। नई कहानी में अनिश्चितता, ग्लानि, रिक्तता बोध, साहित्य की मनःस्थितियां कांपती हुई दिखाई देती हैं।

कार्यक्रम के मुख्य विषय विशेषज्ञ वक्ता प्रोफेसर आनंद वर्धन शर्मा ने भारतीय परंपरा में वाचक शैली के महत्व को बताया। उन्होंने फिनलैंड के ग्रिम बंधु की चर्चा की। भारतेंदु के समय में अनूदित कहानियां ज्यादा प्रकाशित हुई और उसी समय हिंदी कहानी ने नया रूप लेना शुरू किया । हिंदी की प्रथम कहानी कौन सी है इस विषय पर मतभेद है परंतु बाद में नवीन शोधों के आधार पर माधवराव सप्रे की (एक टोकरी भर मिट्टी- १९०१) को ही हिंदी की प्रथम कहानी माना गया। तभी से हिंदी कहानी के क्षेत्र में नए युग की शुरुआत मानी जाती है। प्रेमचंदयुग के कहानीकार अपनी कहानी में व्यक्ति मात्र को महत्व देते हैं। यशपाल, इलाचंद्र जोशी, उपेंद्रनाथ अश्क, अमृतलाल नागर आदि उस समय के महत्वपूर्ण कथाकार हैं ।उस समय रचनाकारों के अपने अनुभव, संवेदनाएं कहानी में

आई। भारत में प्राचीन काल से ही किस्सागोई की परंपरा रही है। कहानियां सदैव ऐसी होनी चाहिए जो की सत्य की कामना को जागृत करें और जीवन के सत्य को पहचान कर उसी रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने गोर्की की कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' का उदाहरण देते हुए समाज की विद्रूपताओं के बारे में बताया और कहा कि भारत में प्रेमचंद की कहानियां हो या फिर फिनलैंड या पोलैंड की तत्कालीन समय की कहानियां हो यदि भाषा बदल दी जाए तो परिस्थितियां एक ही समान हर स्थान पर हर देश में हमें देखने को मिलती हैं। रचनाकार जो कुछ लिख रहा है उसका साधारणीकरण होना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद सन् 1954 में नई कहानी के आरंभिक वर्षों में दो प्रकार की कहानियां मुख्य रूप से लिखी गई जिसमें पहली शहरी वातावरण पर लिखी गई कहानियां हैं और दूसरा अंचल विशेष को लेकर लिखी गई। शिव प्रसाद सिंह, रेणु ,निर्मल वर्मा मुख्य रूप से इस वर्ग में दिखाई देते हैं। नई कहानी में प्रथम कहानी किसे माना जाए इस पर भी विद्वानों में मतभेद है ।निर्मल वर्मा की परिंदे कहानी को नामवर सिंह ने नयी कहानी की प्रथम कहानी माना है। प्रोफेसर शर्मा ने कहा कि आज की कहानी खुद बोलने लगी है। समर्थ कथाकार अनुभूति की इकाई को व्यक्त करता है। नई कहानी के द्वारा हमें समाज की त्रासदी, संत्रास के छिंटे दिखाई पड़े। व्यक्ति का अमानुषिक चेहरा दिखाई पड़ा। लेखक की चिंता ही महत्वपूर्ण मानी जाती है। नई कहानी में प्रेम का, स्त्री-पुरुष संबंधों का निरूपण किया गया। सांकेतिकता का प्रयोग किया गया है। किसी भी लेखक को जीवन, समाज और जनता के निकट रहना चाहिए। पठन और पाठन की मांग लेखक से की जा सकती है। यथार्थ के आधार पर अच्छी कहानियों में तत्कालीन युगीन बोध देखने को मिलता है।

कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर सपना भूषण ने धन्यवाद ज्ञापन दिया । उन्होंने प्रोफेसर आनंद वर्धन शर्मा प्राचार्या, प्रबंधक श्रीमती उमा भट्टाचार्या , विभागाध्यक्षा एवं अन्य सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं संचालिका ,छात्र-छात्राओं एवं सभी श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

संपूर्ण कार्यक्रम का सुंदर और सुव्यवस्थित

संचालन डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

रिपोर्ट लेखन का कार्य डॉक्टर सपना भूषण, डॉ शशि कला और डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव ने किया।

प्रेस रिपोर्ट प्रेषण का कार्य डॉक्टर सपना भूषण ने किया।

कार्यक्रम में कुल 96 लोग उपस्थित रहे।

द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई. संगोष्ठी का हुआ आयोजन

वाराणसी (रणभेरी)। वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वाराह्व स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदीह्व विषय पर द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई.संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. श्रद्धा सिंह, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग आमंत्रित रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ सितार वादन विभाग की अध्यक्षा प्रो. मीनू पाठक द्वारा महाविद्यालय के कुल गीत ह्वनमन मां वसंत देवी जगत वंदितेह्व की सुरम्य सितार वाद्य प्रस्तुति से हुआ। तत्पश्चात प्रो.आशा यादव द्वारा रचित अद्वितीय एनी बेसेंट की प्रशस्ति गीत का सुमधुर गायन सितार वादन विभाग की अध्यक्षा प्रो.मीनू पाठक के निर्देशन में संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में महाविद्यालय की संरक्षिका कर्मठ और विदुषी प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि 1857 की क्रांति से ही हिंदी के प्रचार एवं प्रसार की भी क्रांति हमें दिखाई देती है स्वतंत्रता सेनानियों ने जब हिंदी के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए साधारण जनता को जागृत करने का प्रयास किया तभी अंग्रेजों ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट की स्थापना करके नकारात्मक तत्व के रूप में देशज भाषा पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप सकारात्मक रूप से हिंदी प्रेस का उत्थान हुआ और हिंदी भाषा ने पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का का कार्य किया। महाविद्यालय की प्रबंधक उमा भट्टाचार्य ने भी अपना आशीर्वचन देते हुए आयोजन समिति का उत्साह-वर्धन किया।

उपन्यास, नाटक, निबंध, रिपोतार्ज, यात्रा वृतांत, रंगमंच, काव्य, गीत एवं सूत्रात्मक नारो ने स्वतंत्रता की अलख जगाने का कार्य किया। विशिष्ट मुख्य वक्ता प्रो. श्रद्धा सिंह ने विषय विशेषज्ञ के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि अखिल भारतीय राज्य भाषा सम्मेलन से ही राजभाषा का प्रारंभ हुआ। इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ तृप्ति रानी जयसवाल, डॉ. बिना सिंह, प्रो. मीनू पाठक ,डॉ.कमला पाण्डेय, प्रो.स्वर वंदना शर्मा एवं अन्य सम्माननीय शिक्षक गण उपस्थित रहें। कार्यक्रम का कुशल एवं सुंदर निर्देशन व संयोजन विभागाध्यक्षा प्रो.आशा यादव ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम का सुंदर व सुगठित संचालन डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में कुल 94 श्रोता गण उपस्थित रहें।